स्नातक परिषद् का अधिवेशन सम्पन्न

जयपुर (राज.) : यहाँ शिविर के अवसर पर दिनांक 2 अक्टूबर 2009 को पण्डित टोडरमल स्नातक परिषद् का अधिवेशन सम्पन्न हुआ। सभा की अध्यक्षता पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री देवलाली ने की। मुख्यअतिथि के रूप में श्री प्रकाशचन्दजी सेठिया सरदारशहर तथा विशिष्ट अतिथि के रूप में श्री अम्बरीशजी जैन (आई.आर.एस.-एडिशनल कमिश्नर) लुधियाना एवं श्री मुकेशजी जैन इंदौर मंचासीन थे। विशिष्ट विद्वानों में डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल, पण्डित रतनचन्दजी भारिल्ल एवं पण्डित पूनमचन्दजी छाबड़ा मौजूद थे। उद्घाटन श्री सुनीलजी शास्त्री ग्वालियर ने किया।

इस अवसर पर पण्डित विरागजी शास्त्री जबलपुर, डॉ. भागचन्दजी शास्त्री जयपुर, पण्डित गणतंत्रजी शास्त्री बांसवाड़ा, पण्डित अनेकान्तजी भारिल्ल मुम्बई एवं डॉ. अरविन्दजी शास्त्री सुजानगढ के मार्मिक उद्बोधनों एवं सुझावों का लाभ मिला।

पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री देवलाली के अध्यक्षीय उद्बोधन के पश्चात् डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल के मार्मिक सुझावों एवं मंगल आशीर्वचन का लाभ मिला।

इस प्रसंग पर डॉ. अरविन्दजी शास्त्री सुजानगढ द्वारा लिखित शोध पुस्तक 'समयसार का दार्शनिक परिशीलन' का विमोचन किया गया।

संचालन पण्डित शांतिकुमारजी पाटील ने तथा मंगलाचरण कु. परिणती पाटील ने किया।

(पृष्ठ २६ का शेष...)

विशिष्ट कार्यक्रम ह्न महाविद्यालय के छात्रों द्वारा **हमारे आदर्श छोटे दादा** विषय पर गुरुवार, दिनांक 1 अक्टूबर को दोपहर 2.00 बजे एक संगोष्ठी रखी गई । दिनांक 2-3 अक्टूबर, दोपहर 2 बजे एक राष्ट्रीय विद्वत संगोष्ठी **जैन अध्यात्म को डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल का अवदान** विषय पर आयोजित की गई। श्री टोडरमल स्नातक परिषद का तृतीय राष्ट्रीय अधिवेशन 2 अक्टूबर को रखा गया। 4 अक्टूबर दोपहर 2 बजे अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन का राजस्थान प्रांतीय सम्मेलन आयोजित किया गया एवं सायंकाल हीरक जयन्ती समारोह आयोजन समिति और जयपुर जैन समाज द्वारा विश्वस्तर पर डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल का हीरक जयन्ती समारोह आयोजित किया गया।

सांयकालीन बालकक्षायें डॉ. शुद्धात्मप्रभाजी टड़ैया मुम्बई के निर्देशन में चलीं।

शिविर के मुख्य आमंत्रणकर्त्ता श्री जमनालाल कैलाशचन्द प्रकाशचन्द चेतनलाल एवं रतन सेठी परिवार जयपुर तथा आमंत्रणकर्त्ता श्रीमती सुनीता ध.प. श्री प्रेमचंदजी बजाज सुपुत्र तन्मय ध्याता बजाज कोटा, स्व. श्री राजमलजी पाटनी की स्मृति में उनकी ध.प. श्रीमती रतनदेवी पाटनी सुपुत्र श्री अशोककुमारजी पाटनी परिवार कोलकाता, श्री गौरव-पूजा जैन सुपुत्र श्री परितोषवर्धन जैन जनता कॉलोनी, श्री राहुल-सुनीता जैन सुपुत्र श्री महेन्द्रकुमारजी गंगवाल श्याम नगर जयपुर एवं श्री चिद्रूपबेलजी भाई शाह मुम्बई थे।

शिविर में आयोजित नवलब्धि विधान के आमंत्रणकर्त्ता श्री चक्रेशकुमार अशोककुमार सुशीलकुमार बजाज कोलकाता, स्व. श्री राजमलजी पाटनी की स्मृति में उनकी ध.प. श्रीमती रतनदेवी पाटनी सुपुत्र श्री अशोककुमारजी पाटनी परिवार कोलकाता, स्व. श्री संतोषकुमार राजकुमार जैन की स्मृति में उनकी ध.प. श्रीमती रीता जैन एवं सुपुत्र श्री सौरभ जैन फिरोजाबाद थे। ●

वीतराग-विज्ञान

वीतराग-विज्ञान ही, तीन लोक में सार।
वीतराग-विज्ञान का , घर-घर होय प्रसार।।

वर्ष : 28 316 अंक : 4

हे नर ! भ्रमनींद क्यों न छांडत

हे नर, भ्रमनींद क्यों न छांडत दुखदाई।
सेवत चिरकाल सोंज, आपनी ठगाई।। हे नर.।।

मूरख अघ कर्म कहा, भेदै नहिं मर्म लहा।
लागै दुखज्वाल की न, देह कै ताई।।1।।

जम के रव बाजते, सुभैरव अति बाजते।
अनेक प्रान त्याग ते, सुनै कहा न भाई।।2।।

पर को अपनाय आपरूप को भुलाय हाय।
करन विषय दारु जार, चाह दौं बढ़ाई।।3।।

अब सुन जिनवान, राग-द्वेष को जघान।
मोक्षरूप निज पिछान दौल, भज विरागताई।।4।।

- कविवर पण्डित दौलतरामजी

छहढाला प्रवचन

मिथ्याचारित्र का स्वरूप

इन जुत विषयनि में जो प्रवृत्त, ताको जानो मिथ्याचरित्त।
यों मिथ्यात्वादि निसर्ग जेह, अब जे गृहीत सुनिये सु तेह॥८॥

(सुप्रसिद्ध आध्यात्मिक विद्वान दौलतरामजीकृत छहढाला पर गुरुदेवश्री के प्रवचन पाठकों के लाभार्थ यहाँ प्रस्तुत किये जा रहे हैं।)

जीव को दुःख देनेवाले मिथ्याश्रद्धा तथा मिथ्याज्ञान का स्वरूप कहा जा चुका है, अब इस छन्द में मिथ्याचारित्र का स्वरूप कहा गया है।

जिसकी तत्त्व में भूल है, जिसकी श्रद्धा और ज्ञान मिथ्या है, उसको निजस्वरूप में प्रवृत्तिरूप सच्चा चारित्र नहीं होता; वह मिथ्यात्वसहित बाह्य विषयों में ही वर्तता है; उसको मिथ्याचारित्र जानना चाहिये। ये मिथ्यात्वादि नैसर्गिक हैं, क्योंकि कुगुरु आदि निमित्त के बिना भी जीव निजस्वरूप को भूलकर ऐसी भूल कर रहा है; इसको अगृहीत मिथ्यात्व कहते हैं। कुगुरु आदि के निमित्त से जीव जिन विशेष मिथ्यात्वादि भावों को ग्रहण करता है उसको गृहीत मिथ्यात्व कहते हैं, उसका कथन आगे करेंगे।

चैतन्यस्वभाव शुभ-अशुभ दोनों भावों से भिन्न है, उसकी श्रद्धा,ज्ञान करके उसमें चरना ही सच्चा चरित्र है, वह वीतरागभावरूप है। ऐसा सम्यक् श्रद्धा-ज्ञान-चारित्र जीव ने पूर्व मे कभी प्राप्त नहीं किये। अज्ञान सहित मंदकषाय किया, शुक्ल लेश्या भी की; परन्तु शुक्ललेश्या होना धर्म नहीं है। शुक्लध्यान और शुक्ललेश्या अलग-अलग चीजें हैं; शुक्लध्यान तो मोक्ष का कारण है और शुक्ललेश्या तो उदयभाव है। अज्ञानी को शुक्लध्यान नहीं होता, शुक्ललेश्या किसी को हो सकती है। किसी को शुक्ललेश्या हो और अज्ञानी हो, किसी को कृष्णलेश्या हो और वह ज्ञानी हो ह्न ऐसा भी संभव है; अतः लेश्या के आधार से किसी का ज्ञानी-अज्ञानीपने का निर्णय नहीं होता।

हे जीव! संसार के सर्व दुःखों का कारण यह मिथ्यात्वादिक ही हैं; दूसरा कोई

दुःख देनेवाला नहीं है ह्न ऐसा जानकर उसका त्याग करना चाहिए।

सच्चे तत्त्वज्ञान के द्वारा मिथ्यात्वादिका नाश होता है। सच्चे तत्त्वज्ञान के बिना इन्द्रियविषयों की अभिलाषा कभी नहीं मिटती; भले ही शुभराग और शुभविषय हों; किन्तु वे भी इन्द्रियविषय ही हैं, उनमें मग्न होनेवाला जीव अतीन्द्रिय स्वविषय को भूल रहा है। अनुकूल इन्द्रियविषय मिलने पर अज्ञानी अपने को सुखी समझता है एवं शुभराग होने से अपने को सुखी और धर्मी मान लेता है; परन्तु भाई, यह तो मिथ्याचारित्र है, इसमें सुख कैसा? और धर्म कैसा? वह तो दुःख है, अधर्म है। इसप्रकार अगृहीत मिथ्याश्रद्धा-ज्ञान-चारित्र को दुःख का कारण जानकर उसका त्याग करो।

अब अगृहीत के उपरांत, कुदेव-कुगुरु-कुधर्म के सेवन से होनेवाले गृहीत मिथ्यात्वादि का स्वरूप दिखाकर छोड़ने का उपदेश करते हैं।

जो कुगुरु-कुदेव-कुधर्म सेव, पोषै चिर दर्शनमोह एव।
अन्तर रागादिक धरैं जेह, बाहर धन-अम्बरतैं सनेह ।।९ ।।
धारैं कुलिंग लहि महत भाव, ते कुगुरु जन्मजल उपल नाव।
जो राग-द्वेष मलकरि मलीन वनिता-गदादिजुतचिह्नचीन ।।१० ।।
ते हैं कुदेव, तिनकी जु सेव शठ करत, न तिन भवभ्रमण छेव।
रागादि भावहिंसा समेत, दर्वित त्रस-थावर मरण खेत ।।११ ।।
जे क्रिया तिन्हैं जानहु कुधर्म, तिन सरधै जीव लहै अशर्म।
याकूँ गृहीत मिथ्यात्व जान, अब सुन गृहीत जो है अज्ञान ।।१२ ।।

इन चार छंदों में कुगुरु-कुदेव-कुधर्म का स्वरूप बताकर उनका सेवन छोड़ने का उपदेश है, क्योंकि उनके सेवन से जीव का बहुत अहित होता है। हे जीव! ऐसे दुःखदायी मिथ्याभावों को छोड़कर तू आत्महित के पंथ में लग जा।

(१) कुगुरु आदिका सेवन अनादि के दर्शनमोह को पुष्ट करता है। कैसे है कुगुरु? ह्न अन्तर में तो जिनके मिथ्यात्व और रागादि हैं तथा बाह्य में धन-वस्त्रादि का स्नेह रखते हैं; शुद्ध दिगम्बरदशा के अतिरिक्त अन्य कुलिंग को धारण करके अपने महंतभाव को पुष्ट करते हैं। वे कुगुरु जन्मजल से भरपूर इस संसारसमुद्र में पत्थर की नाव के समान हैं। जैसे पत्थर की नौका स्वयं तो डूबती ही है, **(शेष पृष्ठ 19 पर...)**

(पृष्ठ 14 का शेष ...) उसमें बैठनेवाले भी डूबते हैं; वैसे ही कुगुरु भी स्वयं तो भवसमुद्र में डूबते ही हैं उनका सेवन करनेवाले भी भवसमुद्र में डूबते हैं।

(२) कुदेव कैसे हैं? जो राग-द्वेष-मोहरूपी मैल से मलिन हैं और स्त्री-गदा-मुकुट आदि से चिह्नित हैं वे कुदेव हैं; ऐसे कुदेव की जो मूर्ख जीव सेवा करते हैं उनके भवभ्रमण का छेद नहीं होता। सच्चे सर्वज्ञ-वीतराग जिनदेव ही सुदेव हैं; उनसे विरुद्ध सरागीपने में या वस्त्रादि परिग्रहसहित दशा में देवत्व मानना सच्चे देव की विपरीत श्रद्धा है अर्थात् कुदेवसेवन है, भवभ्रमण का कारण है ; अतः उसका सेवन छोड़ना चाहिए।

(३) कुधर्म क्या है? ह्न जो रागादि भावहिंसा से सहित हैं और त्रस-स्थावर के मरणरूप द्रव्यहिंसा का स्थान है ह्न वे क्रियाएं को कुधर्म होती हैं, ऐसे कुधर्म का सेवन करने से जीव बहुत दुःखी होता है; अतः उसे छोड़ना चाहिए।

इसप्रकार कुगुरु-कुदेव-कुधर्म के सेवनरूप गृहीत मिथ्यात्व को दुःखदायक जानकर त्याग करना चाहिये और सच्चे देव-गुरु-धर्म का स्वरूप पहचानकर, यथार्थ तत्त्वश्रद्धा करके सम्यग्दर्शनादि प्रगट करना चाहिये; यही परम कल्याण का मूल आधार है।

कोई जीव कुदेवादि का सेवन छोड़कर सच्चे देवादिक की पूजा-भक्ति करता है, प्राण चले जाय तो भी कुदेव-कुगुरु को नहीं मानता; परन्तु यदि इतने शुभराग में ही रुक जावे और देव-गुरु ने जो परमार्थ तत्त्व कहा उसकी सच्ची पहचान न करे, स्वसन्मुख होकर शुद्धात्मा की श्रद्धा न करे, तो उसे सम्यग्दर्शन नहीं होता; उसका गृहीतमिथ्यात्व तो छूटा; परन्तु अभी अगृहीत मिथ्यात्व नहीं छूटा। जीव गृहीत मिथ्यात्व से छूटकर ऊँचे स्वर्ग में अनंतबार गया, क्योंकि गृहीत मिथ्यात्ववाला जीव ऊँचे स्वर्ग में नहीं जा सकता; उसको ऐसे ऊँचे पुण्य होते ही नहीं; ऐसे गृहीतमिथ्यात्व को छोड़ने पर भी जीव अन्तर में सूक्ष्मरूप से राग को अपना स्वरूप मानकर उसके वेदन में रुक गया, राग से पार अपने शुद्धस्वरूप का वेदन उसने नहीं किया, इसकारण उसका अनादि का मिथ्यात्व नहीं छूटा और वह संसार में रुलता ही रहा। ●

नियमसार प्रवचन

मूर्त-अमूर्त, चेतन-अचेतन द्रव्य

परमपूज्य सर्वश्रेष्ठ दिगम्बराचार्य कुन्दकुन्द के प्रसिद्ध परमागम नियमसार की 37 वीं गाथा पर हुये आध्यात्मिकसत्पुरुष श्री कानजीस्वामी के अध्यात्मरस गर्भित प्रवचनों का संक्षिप्त सार यहाँ दिया जा रहा है। गाथा मूलत: इसप्रकार है ह्न

पोग्गलदव्वं मुत्तं मुत्तिविरहिया हवंति सेसाणि।
चेदणभावो जीवो चेदणगुणवज्जिया सेसा ।।३७ ।।

(हरिगीत)

एक पुद्गल मूर्त द्रव्य अमूर्तिक हैं शेष सब।
एक चेतन जीव है पर हैं अचेतन शेष सब।।३७।।

पुद्गलद्रव्य मूर्त है, शेष द्रव्य मूर्तत्व रहित हैं; जीव चैतन्यभाववाला है, शेष द्रव्य चैतन्यगुण रहित हैं।

यह, अजीवद्रव्य संबंधी कथन का उपसंहार है। पूर्वोक्त मूल पदार्थों में पुद्गल मूर्त है; शेष पाँचों अमूर्त्त हैं। जीव चेतन है और शेष पाँच अचेतन हैं। जो जानने-देखनेवाला है, वह जीव है; किन्तु रागवाला जीव है ह्न ऐसा नहीं है।

यहाँ सजातीय और विजातीय बंधन की अपेक्षा से जीव तथा पुद्गल को बंध अवस्था में अशुद्धपना होता है तथा धर्मादि चार पदार्थों को विशेष गुण की अपेक्षा से सदा शुद्धपना ही है।

परमाणु-परमाणु का मिलान होना यह सजातीय पुद्गल का अशुद्धपना है और जीव तथा पुद्गल का मिलान होना विजातीय अशुद्धपना है। पुद्गल का सजातीय अशुद्धपना हो अथवा विजातीय अशुद्धपना हो; किन्तु वह परमाणु स्वयं अशुद्धरूप से परिणमित हो तो अशुद्धपना रहता है। आत्मा का आत्मा के साथ मिलान नहीं होता; अतः उसमें सजातीय अशुद्धपना नहीं होता; किन्तु जीव और पुद्गल का मिलान होने पर विजातीय अशुद्धपना जीव को होता है। उस विजातीय

जीव को संसारदशा में चौदहवें गुणस्थान तक अशुद्धपना रहता है, वह विजातीय अशुद्धपना है; किन्तु यह अशुद्धता किसी धर्म के कारण हो ह्न ऐसा नहीं है।

इसप्रकार जीव और पुद्गल को बंध अवस्था में अशुद्धपना होता है, धर्म, अधर्म, आकाश और काल इन चार द्रव्यों को अशुद्धपना नहीं होता। छह द्रव्यों के सामान्य गुणों में तो शुद्धता ही रहती है; किन्तु विशेष गुणों में अशुद्धता होती है। विशेष गुणों की अशुद्धता भी जीव और पुद्गल को ही होती है; किन्तु धर्मादि चार पदार्थों के विशेष गुण में भी अशुद्धता नहीं होती। वे सदा शुद्ध ही रहते हैं।

१. जीव को स्वजातीय अशुद्धपना नहीं होता।
२. जीव को विजातीय अशुद्धपना होता है।
३. पुद्गल को स्वजातीय और विजातीय दोनों ही अपेक्षा से अशुद्धपना है।
४. धर्मादि चार द्रव्यों में कभी अशुद्धपना नहीं है।
५. विशेष गुणों में अशुद्धपना होता है।
६. सामान्य गुणों में अशुद्धपना नहीं होता।

देखो, यहाँ तो आत्मा में भी अशुद्धपना होता है, ऐसा कहते हैं; फिर भी अज्ञानी ऐसा कहते हैं कि अध्यात्मवादीजन अशुद्धपना नहीं मानते; वह ऐसा कहता है कि अशुद्धपना तुम्हारे मानने से होता है। बाह्य में दया, दान, भक्ति, व्रत, उपवास आदि की क्रिया करें, इससे अशुद्धता का नाश होता है ह्न ऐसा माने तो अशुद्धपने को माना ह्न ऐसा कहने में आता है।

यहाँ कहते हैं कि आत्मा स्वभाव से त्रिकाल शुद्ध है और उसके सामान्य गुण भी शुद्ध ही है। विशेष गुणों की पर्याय में अशुद्धता होती है। आत्मा चिदानन्द है ह्न ऐसा अवलम्बन लेवें तो अशुद्धता उत्पन्न ही नहीं होती ह्न इसे ही अशुद्धता नष्ट हुई ऐसा कहा जाता है। क्रियाकाण्ड से अशुद्धता दूर नहीं होती।

नियमसार की विगत गाथाओं में कहा था कि अनेक प्रकार के जीव हैं, अनेक प्रकार की लब्धि है और अनेक प्रकार के कर्म है। कोई किसी को समझा नहीं सकता। प्रत्येक जीव स्वक्षयोपशम के अनुसार समझता है। अतः समझने के लिए अच्छी तरह से समझना चाहिए।

अब, इस अधिकार की टीका पूर्ण करते हुए मुनिराज श्लोक कहते हैं ह्न

(मालिनी)

इति ललितपदानामावलिर्भाति नित्यं
वदनसरसिजाते यस्य भव्योत्तमस्य।
सपदि समयसारस्तस्य हृत्पुण्डरीके
लसति निशितबुद्धेः किं पुनश्चित्रमेतत् ।।५३।।

(हरिगीत)

जिस भव्य के मुख कमल में ये ललितपद वसते सदा।
उस तीक्ष्णबुद्धि पुरुष को शुद्धातमा की प्राप्ति हो।।
चित्त में उस पुरुष के शुद्धातमा नित ही वसे।
इस बात में आश्चर्य क्या यह तो सहज परिणमन है।।५३।।

इसप्रकार ललित पदों की पंक्ति जिस भव्योत्तम के मुखारविन्द में सदा शोभती है, उस तीक्ष्ण बुद्धिवाले पुरुष के हृदयकमल में शीघ्र समयसार (शुद्ध आत्मा) प्रकाशित होता है। इसमें क्या आश्चर्य है?

अजीव के स्वरूप का यथार्थ ज्ञान उसे हुआ जिसे अजीव पदार्थों की भिन्नता का ज्ञान है तथा उनसे किसी प्रकार की लाभ-हानि नहीं मानता। वास्तव में जीव अजीव का कुछ नहीं कर सकता ह्न ऐसा जिनके ज्ञान में निर्णय है उसे अजीव पदार्थ का यथार्थ ज्ञान है। भव्योत्तम जीव के मुख में जीव-अजीव की बात शोभा देती है।

मैं जीव हूँ, ज्ञानस्वरूप हूँ; पर अजीव है; मुझमें और उसमें कोई संबंध नहीं है ह्न ऐसा जिसको ज्ञान है ह्न उन भव्यों के मुख में यह वाणी शोभा देती है।

मुझमें और पर में कोई संबंध नहीं है, विकल्प के साथ भी मेरा कोई संबंध नहीं है। आत्मा के निज स्वभाव में जो बारंबार रमण करता है, वह चैतन्य परमात्मा हो जाता है। जीव और अजीव का तो एकपना नहीं होता; किन्तु एक जीव और अन्य जीव का एकपना भी ज्ञानी नहीं करता; क्योंकि परजीव इस जीव की अपेक्षा अजीव ही है। ऐसा भोजन करने वाला जीव ही अपने पूर्णस्वरूप को प्राप्त करता है, इसमें कोई आश्चर्य नहीं है।

इसप्रकार अजीव अधिकार नामक दूसरा श्रुतखण्ड समाप्त हुआ। ●

ज्ञान गोष्ठी

सायंकालीन तत्त्वचर्चा के समय विभिन्न मुमुक्षुओं द्वारा
पूज्य स्वामीजी से पूछे गये प्रश्न और स्वामीजी द्वारा दिये गये उत्तर

प्रश्न : आत्मज्ञान करने के लिये तो अनेक शास्त्रों का गहन अध्ययन करना पड़ेगा। यदि इसके लिये कोई सरल मार्ग हो तो बतलाइये?

उत्तर : आत्मज्ञान के लिये बहुत से शास्त्रों के पढने की बात ही कहाँ है? तुम्हारी पर्याय दु:ख के कारणों की तरफ झुकती है, उसे सुख के कारणभूत स्वभाव के सन्मुख लगा दो- इतनी सी बात है। स्वयं आत्मा अनन्त-अनन्त गुण-सम्पन्न भगवान ज्ञानानन्द स्वरूप है, उसकी महिमा लाकर स्वसन्मुख हो जाओ ! इतनी सी करने योग्य क्रिया है। अपनी पर्याय को द्रव्य-सन्मुख लगा दो-बस आत्मज्ञान का यही मार्ग है।

प्रश्न : स्वभाव- सन्मुख होने के लिए मैं शुद्ध हूँ, ज्ञायक हूँ इत्यादि चिंतवन करते-करते कुछ अपूर्व आनन्द का स्वाद आता है। वह आनन्द अतीन्द्रिय है अथवा कषाय की मन्दता का है-इसका निर्णय कैसे हो ?

उत्तर : चिंतवन में कषाय की विशेष मन्दता होने पर उसे आनन्द मान लेना तो भ्रम है, वह वास्तविक अतीन्द्रिय आनन्द नहीं है। अतीन्द्रिय आनन्द का स्वाद आने पर तो राग और ज्ञान की भिन्नता प्रतीति में आती है। इस अतीन्द्रिय आनन्द का क्या कहना ? अलौकिक है। सच्ची रुचिवाले जीव को कषाय की मन्दता में अतीन्द्रिय आनन्द का भ्रम नहीं होता।

प्रश्न : आत्मसंस्कारों को दृढ करने के लिए क्या करना ?

उत्तर : वस्तुस्वरूप का दृढ निर्णय करना। शुद्ध हूँ, एक हूँ, ज्ञायक हूँ- इसका चारों तरफ से बारम्बार निर्णय पक्का करके दृढ करना।

प्रश्न : सत् का संस्कार डालने से क्या लाभ है ?

उत्तर : जिसप्रकार कोरे मटके में जल की बूँदें डालने से मटका उसे चूस लेता है और जल की बूँदें ऊपर दृष्टिगोचर नहीं होती, फिर भी जल की आर्द्रता तो अन्दर रहती ही है, इसी कारण विशेष बूँदे पड़ने पर मटके की मिट्टी गीली हो जाती है और जल उसके ऊपर दिखाई देने लगता है; उसीप्रकार जो जीव सत् की गहरी जिज्ञासा करके सत् के गंभीर संस्कार अन्दर में डालेगा, उस जीव को कदाचित् वर्तमान में पुरुषार्थ की कचास के कारण, कार्य न हो सके, तथापि सत् के गहरे डाले हुए संस्कार दूसरी गति में प्रकट होंगे; अत: सत् के गहरे संस्कार अवश्य डालो।

डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल हीरक जयन्ती समारोह आयोजन समिति द्वारा आयोजित ह्न

डॉ. भारिल्ल का हीरक जयन्ती समारोह

जयपुर : यहाँ टोडरमल स्मारक भवन में आध्यात्मिक शिक्षण शिविर के मध्य दिनांक 4 अक्टूबर को सायंकाल हीरक जयन्ती समारोह आयोजन समिति द्वारा तत्त्ववेत्ता डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल का हीरक जयन्ती समारोह आयोजित किया गया। लगभग 3 घण्टे तक अविरल चले इस समारोह में संपूर्ण देश के सहस्राधिक लोगों की उपस्थिति रही।

मंचासीन अतिथि ह्न इस अवसर पर आयोजित विशाल सभा की अध्यक्षता श्री एन.के.सेठी (अध्यक्ष, श्री दि.जैन अतिशय क्षेत्र श्रीमहावीरजी) ने की। मुख्यअतिथि के रूप में माननीय श्री प्रदीपकुमारजी जैन (ग्रामीण विकास राज्यमंत्री, भारत सरकार) मंचासीन थे। विशिष्ट अतिथियों के रूप में सम्मानमूर्ति डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल, माननीय श्री खिल्लीमलजी जैन (नि:शक्तजन आयुक्त, राजस्थान सरकार), पण्डित रतनचन्दजी भारिल्ल (प्राचार्य, टोडरमल सिद्धांत महाविद्यालय), श्री तेजकरणजी डंडिया (प्रसिद्ध शिक्षाविद्), श्री पवनजी जैन मंगलायतन-अलीगढ़, श्री सुशीलकुमारजी गोदीका, श्री महेन्द्रकुमारजी पाटनी (मंत्री-आयोजन समिति), श्री डालचन्दजी जैन सागर (पूर्व सांसद), भारतीय ज्ञानपीठ से पुरस्कृत उड़ीसा विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति पद्मश्री डॉ. सत्यव्रतजी शास्त्री दिल्ली, श्री कमलकुमारजी जैन झांसी एवं श्रीमती गुणमालाजी भारिल्ल मंचासीन थे।

कार्यक्रम का शुभारंभ श्रीमती ज्योति जैन जयपुर के मंगलाचरण से हुआ।

इस अवसर पर **श्री तेजकरणजी डंडिया जयपुर** ने 42 वर्ष पहले डॉ. भारिल्ल के जयपुर आने से जुड़े अनेक संस्मरण सुनाते हुये उनका संक्षिप्त परिचय दिया। **पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री देवलाली** ने गुरुदेवश्री एवं डॉ. भारिल्ल से जुड़े लगभग 40 वर्षों पुराने मार्मिक संस्मरण सुनाये। जयपुर दूरदर्शन/रेडियो कलाकार **श्रीमती मालती जैन जयपुर** ने काव्य पाठ के माध्यम से दादा के उपकारों को प्रस्तुत किया।

डी.लिट् की उपाधि ह्न अलीगढ़ से पधारे श्रीमान् पवनकुमारजी मंगलायतन ने अपने उद्बोधन में डॉ. भारिल्ल की प्रशंसा करते हुये आगामी 28 अक्टूबर को मंगलायतन विश्वविद्यालय के द्वारा डी.लिट् की उपाधि प्रदान करने की घोषणा की।

विशिष्ट सम्मान ह्न श्री प्रदीपकुमारजी जैन (ग्रामीण विकास एवं राज्यमंत्री भारत सरकार) का श्री शुद्धात्मप्रकाशजी भारिल्ल ने तिलक, श्री परमात्मप्रकाशजी भारिल्ल ने माल्यार्पण, श्री राजकुमारजी काला ने शॉल, श्री मिलापचन्दजी डंडिया ने श्रीफल, श्री महेन्द्रकुमारजी पाटनी ने साफा एवं श्री नरेशकुमारजी सेठी ने प्रशस्ति पत्र से सम्मान किया।

सम्मानमूर्ति तत्त्ववेत्ता डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल का श्री कमलजी जैन झांसी ने तिलक, श्री नरेशकुमारजी सेठी ने माला, श्री तेजकरणजी डंडिया ने साफा, श्री अशोककुमारजी बड़जात्या ने शाल, श्री महेन्द्रकुमारजी पाटनी ने श्रीफल एवं श्री प्रदीपजी जैन (राज्यमंत्री) ने प्रशस्ति पत्र देकर सम्मान किया।

इसके अतिरिक्त **राष्ट्रीय संस्थाओं में** श्री दिगम्बर जैन महासमिति से **श्री पद्मचंदजी सेठी**

जयपुर, अखिल भारतवर्षीय दिगम्बर जैन परिषद् दिल्ली से **डॉ.राजेन्द्रकुमारजी बंसल** (संयुक्त राष्ट्रीय महामंत्री), श्री अ.भा.दि.जैन विद्वत्परिषद् दिल्ली से **श्री पी.सी.रांवका जयपुर**, दि. जैन सोश्यल ग्रुप फैडरेशन से **श्री हुकमचन्द शाह बजाज इन्दौर**, अखिल भारतीय जैन पत्र संपादक संघ से **श्री अखिलजी बंसल जयपुर**, हूमड़ जैन समाज की ओर से **श्री हंसमुख जैन गांधी इंदौर** (राष्ट्रीय अध्यक्ष), तारणतरण समाज से **श्री डालचन्दजी सागर**, तीर्थधाम मंगलायतन अलीगढ़ से **श्री पवनजी जैन अलीगढ़**, मुमुक्षु आश्रम ट्रस्ट कोटा से **श्री प्रेमचन्दजी बजाज कोटा**, पूज्य श्रीकानजीस्वामी स्मारक ट्रस्ट देवलाली से **श्री उल्लासभाई जोबालिया मुम्बई**, शासन प्रभावना ट्रस्ट(ढाई द्वीप जिनायतन) इन्दौर से **श्री मुकेशजी जैन इन्दौर**, तीर्थधाम सिद्धायतन द्रोणगिरि से **मा.चन्द्रभान जैन द्रोणगिरि**, चैतन्यधाम अहमदाबाद से **श्री सतीश अमृतलाल मेहता** फतेपुर/अहमदाबाद, टोडरमल स्नातक परिषद् से **पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री देवलाली** आदि ने डॉ.भारिल्ल का सम्मान किया।

प्रांतीय संस्थाओं में राजस्थान जैन सभा से **श्री कमलबाबू जैन जयपुर**, राजस्थान प्रांतीय भारत जैन महामण्डल से **श्री सम्पतकुमारजी गदैया जयपुर**, दि. जैन महासमिति राज.अंचल से **श्री सुरेन्द्रकुमारजी पाटनी**, दि.जैन सोश्यल ग्रुप फैडरेशन राज.से **श्री सुरेन्द्रकुमारजी पांड्या**, राज.जैन युवा महासभा से **श्री प्रदीप जैन**, जैन डाक्टर्स फोरम राजस्थान से **डॉ. जी.सी.सोगानी**, राजस्थान प्रान्तीय महिला भारत जैन महामण्डल से **श्रीमती स्वयंप्रभा गदैया जयपुर** आदि ने डॉ.भारिल्ल का सम्मान किया।

स्थानीय संस्थाओं में श्री दि.जैन आचार्य संस्कृत महाविद्यालय से **श्री रमेशचन्दजी पापड़ीवाल**, आई.एस.आई. विश्वविद्यालय गांधी विद्यामन्दिर सरदारशहर से **श्री प्रकाशजी जैन सेठिया**, पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट जयपुर से **श्री सुशीलकुमारजी गोदीका**, रतन चेरिटेबल ट्रस्ट सरदारशहर से **श्री अभयकरणजी** एवं **श्री सुबोधजी सेठिया**, दि.जैन मंदिर लश्कर इंदौर से **श्री क्रान्तिकुमारजी पाटनी इंदौर**, दि.जैन एकता मंच से **श्री अशोकजी लुहाड़िया जयपुर**, जैन अनुशीलन केन्द्र से **डॉ.पी.सी.जैन**, दि.जैन समाज बापूनगर संभाग से **डॉ.राजेन्द्रजी जैन**, पार्श्वनाथ दि.जैन चैत्यालय से **श्री ताराचन्दजी पाटनी**, अरहंत केपिटल इंदौर से **श्री शुद्धात्मप्रकाश भारिल्ल**, जैन सोश्यल ग्रुप हवामहल से **श्री पवनकुमारजी बज**, मंगलमार्ग मोहल्ला विकास समिति से **श्री कैलाशचन्द वैद्य**, पिंकसिटी श्योशल न्यूज से **श्री राकेशजी गोधा**, दिग.जैन सर्वोदय स्वाध्याय समिति शाहुपुरी कोल्हापुर से **ब्र.यशपालजी जयपुर**, वीतराग विज्ञान महिला मंडल बापूनगर से **श्रीमती कमलाजी भारिल्ल**, जैन नवयुवक मंडल शहपुर बेलगाँव से **श्री रामकस्तूरे बेलगाँव**, जिनागम एवं श्रमण संस्कृति संरक्षण संवर्धन न्यास ग्वालियर से **श्री रवीन्द्रजी मालव ग्वालियर**, भक्तामर मंडल इंदौर से **श्री पूरणचन्दजी जैन** आदि ने डॉ. भारिल्ल का सम्मान किया।

श्रीमती गुणमालाजी भारिल्ल का सम्मान श्रीमती मालती जैन ने माल्यार्पण, श्रीमती सुशीला जैन ने शॉल ओढ़ाकर तथा श्रीमती स्वयंप्रभा गदैया ने श्रीफल देकर किया। इसके पश्चात् शताधिक लोगों ने व्यक्तिगतरूप से सम्मान किया।

कार्यक्रम का सफल संचालन श्री अशोकजी बड़जात्या इन्दौर ने किया।

बारहवाँ आध्यात्मिक शिक्षण-शिविर सानन्द सम्पन्न

जयपुर (राज.) : पण्डित टोडरमल सर्वोदय ट्रस्ट द्वारा ज्ञानतीर्थ श्री टोडरमल स्मारक भवन बापूनगर में आयोजित बारहवें आध्यात्मिक शिक्षण-शिविर का उद्घाटन रविवार, दिनांक 27 सितम्बर को श्री अभयकरणजी सेठिया, सरदारशहर के करकमलों से हुआ।

संचालन श्री शुद्धात्मप्रकाशजी भारिल्ल ने किया । उद्घाटन सभा के पूर्व ध्वजारोहण श्री निहालचंदजी घेवरचंदजी जैन, जयपुर के कर कमलों से हुआ।

शिविर में प्रतिदिन के कार्यक्रमों की शुरुआत गुरुदेवश्री के सी.डी. प्रवचनों से होती थी।

मुख्य प्रवचन ह्न शिविर में प्रतिदिन सी.डी. प्रवचनों के पश्चात् ख्यातिप्राप्त तार्किक विद्वान डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल के समयसार ग्रंथाधिराज की गाथा 64 वीं से 68 तक मार्मिक प्रवचन हुये। आपके प्रवचन से पूर्व एक-एक दिन पण्डित रतनचन्दजी भारिल्ल जयपुर, पण्डित परमात्मप्रकाशजी भारिल्ल मुम्बई, पण्डित संजीवकुमारजी गोधा, पण्डित राकेशकुमारजी शास्त्री दिल्ली, पण्डित पीयूषकुमारजी शास्त्री जयपुर, पण्डित विरागजी शास्त्री जबलपुर, पण्डित प्रवीणजी शास्त्री जयपुर, पण्डित शिखरचन्दजी जैन विदिशा के प्रवचनों का लाभ मिला।

रात्रि कालीन प्रवचनों में प्रतिदिन पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री देवलाली के प्रवचनों का लाभ मिला। इसके पूर्व एक-एक प्रवचन पण्डित नरेन्द्रजी शास्त्री जयपुर, पण्डित राजकुमारजी शास्त्री बाँसवाड़ा, पण्डित शांतिकुमारजी पाटील, पण्डित कमलचन्दजी पिड़ावा, पण्डित शुद्धात्मप्रकाशजी भारिल्ल, पण्डित कमलेशजी मौ एवं डॉ. महावीरप्रसादजी शास्त्री उदयपुर का हुआ।

सायंकाल जिनेन्द्र भक्ति के उपरान्त महाविद्यालय के छात्र विद्वानों के प्रवचन हुये।

शिक्षण कक्षायें ह्न पण्डित रतनचंदजी भारिल्ल द्वारा निमित्तोपादान, ब्र. यशपालजी जैन द्वारा गुणस्थान विवेचन, पण्डित अभयकुमारजी देवलाली द्वारा नयचक्र (द्रव्यार्थिक-पर्यायार्थिक नय), पण्डित शांतिकुमारजी पाटील द्वारा समयसार (कर्त्ताकर्म अधिकार), पण्डित संजीवकुमारजी गोधा द्वारा क्रमबद्धपर्याय विषय पर कक्षायें ली गईं।

प्रौढ कक्षा (प्रात: ६.०० से ६.४० तक) ह्न पण्डित पूनमचंदजी छाबड़ा, पण्डित कमलचंदजी पिड़ावा, डॉ.दीपकजी एवं पण्डित कांतिकुमारजी पाटनी इन्दौर का लाभ मिला। इसके तत्काल बाद 6.40 से 7 बजे तक जी-जागरण टी.वी.चैनल पर आने वाला डॉ. भारिल्ल के प्रवचन का प्रसारण प्रवचन हॉल में ही बड़े पर्दे पर किया जाता था, जिसे सभी शिविरार्थी अत्यंत रुचिपूर्वक सुनते थे।

दोपहर में 1:30 से 2 बजे तक बाबू युगलजी के सी. डी. प्रवचन के पश्चात् पण्डित राजकुमारजी शास्त्री उदयपुर, डॉ. राजेन्द्रजी बंसल अमलाई, डॉ. दीपकजी जैन, पण्डित रमेशचन्दजी लवाण, डॉ. भागचन्दजी शास्त्री, डॉ. नीतेशजी शास्त्री, पण्डित मनीषजी शास्त्री कहान, पण्डित गणतंत्रजी शास्त्री बांसवाड़ा एवं पण्डित परेशजी शास्त्री जयपुर आदि विशिष्ट विद्वानों द्वारा व्याख्यानमाला एवं प्रवचन हुआ।

(शेष पृष्ठ - 4 पर...)

हीरक जयन्ती समारोह : विशिष्ट उद्बोधन

जयपुर (राज.)/4 अक्टूबर, 2009 : डॉ.हुकमचन्द भारिल्ल की हीरक जयन्ती के अवसर पर बोलते हुए पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री, देवलाली ने कहा कि संपूर्ण समाज जानता है कि **गुरुदेवश्री कानजी स्वामी द्वारा जिनागम का जो रहस्य उद्घाटित किया गया है, उसको सही रूप में ग्रहण करनेवाला वर्तमान में यदि कोई है तो वे हैं डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल।**

डॉ. भारिल्ल ने पूज्य गुरुदेवश्री का न केवल आशीर्वाद प्राप्त किया; अपितु उन्होंने डॉ. साहब की पुस्तकों की अपने प्रवचनों में मुक्त कंठ से प्रशंसा की है। डॉ. भारिल्ल ने अपनी लेखनी, अपने तर्कों और अपनी वाणी से गुरुदेवश्री का ऐसा अटूट विश्वास जीता था कि जब दीपावली के अवसर पर सभी लोग उन्हें नारियल भेंट करते थे, तब उन्होंने एक बड़े आकार का श्रीफल मंगाया और डॉ. भारिल्ल को देते हुये कहा कि **लो यह मोक्ष का श्रीफल है। लोग मुझे श्रीफल भेंट करते है, पर मैं आज तुम्हें श्रीफल भेंट कर रहा हूँ।** यह कहकर उन्होंने डॉ. साहब का अभिनन्दन किया, भरपूर आशीर्वाद दिया।

यह सब देखकर वहाँ की सारी सभा आश्चर्यचकित रह गई, वह दृश्य मेरी आँखों में आज भी झूलता है।

इसीतरह बड़ौदा पंचकल्याणक में प्रवचन के बीच में ही श्रोताओं के बीच बैठे डॉ. साहब से कहा **तुम वहाँ क्यों बैठते हो, यहाँ आओ, मेरे पास पाट पर बैठो, हमेशा यहीं बैठा करो ह्न इसप्रकार कहकर अपने पास पाट पर बिठाया।** वस्तुत: बात यह है कि **दादा (डॉ.साहब) को गुरुदेवश्री का धर्मपुत्र होने का गौरव प्राप्त है।**

उन्होंने अनेकों बार कहा कि इसने क्रमबद्धपर्याय लिखकर समाज पर बहुत उपकार किया है।

डॉ. साहब की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि कितने ही आँधी-तूफान क्यों न आवे, वे अपने संकल्प से विचलित नहीं होते।

मैंने परसों टोडरमल स्मारक परिषद के अधिवेशन में बोलते हुये कहा था कि इस उम्र में भी वे स्वास्थ्य की परवाह किये बिना अपने लक्ष्य की पूर्ति में निरन्तर लगे रहते हैं। यह हमारे लिये अनुकरणीय है।

आदरणीय डंडियाजी ने 100 वर्ष तक जीने की भावना भाई है; मैं वर्षों की गिनती तो नहीं करता, पर भावना भाता हुआ उस मंगल घड़ी की प्रतीक्षा करूंगा कि जब 1008 वाँ शिष्य (शास्त्री) पास होकर उनके चरण छूयेगा और वे उसे आशीर्वाद देंगे। ●

जयपुर (राज.)/ 4 अक्टूबर, 2009 : मंगलायतन, अलीगढ से पधारे श्री पवन जैन ने अपने भाषण में कहा कि आँख उठाकर देखें तो **सम्पूर्ण विश्व में जैनधर्म से संबंधित जितना साहित्य डॉ. भारिल्ल ने लिखा है, उतना साहित्य किसी अन्य के द्वारा नहीं लिखा गया। पूज्य गुरुदेव श्री कानजीस्वामी के बाद उतने प्रवचन भी किसी अन्य ने नहीं किये होंगे, जितने डॉ. भारिल्ल ने देश-विदेश में किये हैं।**

दुनिया कुछ भी क्यों न कहे, पर यह सच्चाई है कि परमपूज्य गुरुदेवश्री के नाम को विश्व

के कोने-कोने तक पहुँचाने में डॉ.भारिल्ल का जो योगदान है, वह भी कम महत्त्वपूर्ण नहीं।

मैंने जब इनकी लिखी पुस्तकों की एक-एक प्रति मंगवाई तो पूरे तीन बंडल आ गये। एक-एक प्रति भी तीन बंडलों में आ पाई, जो आज भी मंगलायतन विश्वविद्यालय के कुलपति के ऑफिस में लगी हुई हैं।

मैं एक बहुत महत्त्वपूर्ण घोषणा करने इस अवसर पर आया हूँ। उक्त घोषणा करने के पूर्व मंगलायतन के अध्यक्ष श्री अजितप्रसादजी दिल्ली, मंगलायतन के संस्थागत ट्रस्टी भाई श्री परमात्मप्रकाशजी भारिल्ल मुम्बई और सदस्य श्री आदीशजी दिल्ली को भी स्टेज पर बुलाना चाहता हूँ, जिससे मैं उनकी साक्षी में यह महत्त्वपूर्ण घोषणा कर सकूँ।

तालियों की गडगडाहट के बीच उन्होंने घोषणा की कि **मंगलायतन विश्वविद्यालय, अलीगढ़ ने इस वर्ष डॉ. भारिल्ल को डी. लिट. की उपाधि से अलंकृत करने का फैसला किया है।** यह उपाधि 28 अक्टूबर 2009 को मंगलायतन विश्वविद्यालय के दीक्षान्त समारोह के अवसर पर दी जावेगी। उक्त अवसर पर आप सब भी सादर आमंत्रित हैं। जो भाई आना चाहें, वे हमें पहले सूचना अवश्य कर दें, जिससे उनकी समुचित व्यवस्था की जा सके।

क्या आप जानते हैं कि जैन समाज में किसी विद्वान को यह मानद उपाधि पहली बार दी जा रही है।

मैं इस अवसर पर एक बात और भी कहना चाहूँगा कि जब हमने डॉ. भारिल्ल से उस व्याख्यान का आलेख मांगा तो जो आलेख हमें प्राप्त हुआ, उसमें तीन बार **आध्यात्मिकसत्पुरुष श्री कानजीस्वामी के नाम का उल्लेख था।** डॉ. भारिल्ल ने उसमें लिखा कि यह मेरा सम्मान नहीं है, उस जिनवाणी का सम्मान है, जिसकी सेवा मैंने की है, उन पूज्य गुरुदेवश्री का सम्मान है, जिनसे यह तत्त्वज्ञान मुझे प्राप्त हुआ है, यह सम्मान पूरी जैन समाज का है कि जिसने मुझे अपने हृदय में बिठा रखा है।

डॉ. भारिल्ल को डी.लिट. की उपाधि देकर मंगलायतन विश्वविद्यालय, अलीगढ अपने को धन्य अनुभव कर रहा है। ●

मुख्यअतिथि के रूप में बोलते हुये केन्द्रीय राज्यमंत्री श्री प्रदीप जैन 'आदित्य' ने कहा कि **इस कार्यक्रम में जिनके अभिनन्दन के लिये हम लालायित हैं, जिन्होंने सम्पूर्ण विश्व में मानवता को एक दिशा दिखाई है, जिन्हें हम युगपुरुष भी कह सकते हैं, युगविचारक भी कह सकते हैं, जिन्होंने बुन्देलखण्ड की पवित्र धरा को गौरवान्वित किया है; उन सरलता और सहजता के धनी श्रद्धेय डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल ने पूज्य गुरुदेवश्री के बाद मानव दर्शन के लिये दिशा देने का जो महान कार्य किया है, उसका कोई सानी नहीं है।**

जब हीरे किसी खदान में पड़े रहते हैं तो उन्हें कोई नहीं जानता, कोई नहीं पहिचानता; पर जब वे ही हीरे किसी चतुर जौहरी के द्वारा तराशे जाते हैं, तो उनकी चमक सभी को चकाचौंध कर देती है। उसीप्रकार **आपने जैन धर्म के अध्येता विद्वानों के क्षेत्र में अनेक हीरे तराशे हैं; जब वे समाज में जाते हैं और समाज उन्हें सुनता है तो अचम्भित होकर रह जाता है। श्रद्धेय भारिल्लजी आपने गजब का कार्य किया है।**

समाज में ईंट-पत्थर की संस्थायें तो बहुत बन जाती है; लेकिन **डॉ. भारिल्ल एक व्यक्ति नहीं,**

चलती-फिरती संस्था है। उन्होंने जो कार्य किया है, वह अद्वितीय है। मुझे वह दिन याद आता है, जब हम पाठशाला में जाते थे और डॉ. साहब की लिखी पुस्तकें उन्हीं के द्वारा तराशे हुये विद्वानों से पढ़ते थे। हमारी मम्मी आरंभ से ही बहुत धार्मिक रही और इस टोडरमल स्मारक से जुड़ी रहीं। वे हम लोगों से कहती थीं कि डॉ. साहब की बालबोध पाठमालायें पढ़ो, वीतराग-विज्ञान पाठमालायें पढ़ो; वे पुस्तकें हम पढ़ते थे। वे बहुत ही रोचक थीं। जीव क्या है ? अजीव क्या है ? आदि बातें उनमें बहुत अच्छी तरह समझायी हैं। आज हमें उन्हीं डॉ.साहब की हीरक जयन्ती में आने का मौका मिला, उससे हम जीवन भर अनुगृहीत रहेंगे।

हम चाहते हैं कि **डॉ. भारिल्ल जी इन प्रकाश किरणों को केवल जैनसमाज तक ही सीमित नहीं रहने दें, अपितु देश-विदेश में करोडों जैन-अजैन लोगों तक पहुँचायें।** अनेक जाति और अनेकों सम्प्रदायों के करोड़ों लोग आप जैसे विद्वानों को सुनने-समझने के लिये छटपटाते रहते हैं, भटकते रहते हैं, कभी किसी शिविर में चले गये, कभी किसी शिविर में चले गये ह्न इसप्रकार भटकते रहते हैं। **जिनको आपने शिक्षा दी है, वे आपके विद्यार्थी भी हमारे पूज्य पण्डितजी हैं, उन्हें सुनकर भी हम बहुत लाभान्वित होते हैं। हम चाहते हैं कि अन्य समाजवाले लोग भी आपके दर्शन और प्रवचन से अपना कल्याण करें।**

मैं इस हीरक जयन्ती के अवसर पर आपके चरणों में नमन करता हूँ, प्रणाम करता हूँ और प्रार्थना करता हूँ कि आप दीर्घायु हों, यशस्वी हों, आपके विचारों की कीर्ति, आपके ज्ञान का वैभव केवल इस देश में ही नहीं, केवल जैनसमाज में ही नहीं; सभी देशों और सभी समाजों में; उसीप्रकार फैले जैसे अभी यहाँ फैल रहा है।

युवा फैडरेशन राज. प्रान्तीय सम्मेलन

जयपुर : यहाँ दिनांक 4 अक्टूबर को दोपहर में अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन के राजस्थान प्रान्तीय सम्मेलन का आयोजन किया गया। इस अवसर पर आयोजित सभा की अध्यक्षता राज.प्रदेश प्रभारी श्री जिनेन्द्रजी शास्त्री उदयपुर ने की। मुख्य अतिथि के रूप में जयपुर जिला कलेक्टर श्री कुलदीपजी रांका (जैन) तथा विशिष्ट अतिथि के रूप में श्री देव कोठारी उदयपुर, श्री परमात्मप्रकाशजी भारिल्ल मुम्बई, श्री अध्यात्मप्रकाशजी भारिल्ल मुम्बई, श्री शुद्धात्मप्रकाशजी भारिल्ल जयपुर, श्री आदीशजी जैन दिल्ली आदि मंचासीन थे।

अतिथियों का स्वागत प्रदेश उपाध्यक्ष श्री अजितजी शास्त्री अलवर ने किया। मंगलाचरण अलवर शाखा से श्री विकासजी जैन एवं विपिनजी जैन ने किया।

इस अवसर पर बांसवाड़ा की रिपोर्ट श्री गणतंत्रजी शास्त्री, उदयपुर की रिपोर्ट डॉ. महावीरप्रसादजी शास्त्री उदयपुर, जयपुर की रिपोर्ट डॉ. भागचन्द जैन शास्त्री एवं अलवर शाखा की रिपोर्ट एवं आगामी योजनाओं को अलवर शाखा के अध्यक्ष श्री शशीभूषणजी जैन ने प्रस्तुत किया।

विशिष्ट अतिथियों एवं अध्यक्षीय उद्बोधन के पश्चात् अन्त में आभार प्रदर्शन पण्डित संजीवकुमारजी गोधा ने किया।

कार्यक्रम का संचालन पण्डित राजकुमारजी शास्त्री बांसवाड़ा ने किया।

शोक समाचार

1. जयपुर लाल कोठी निवासी श्रीमान् जमनालालजी सेठी का दिनांक 12 अक्टूबर, 09 को प्रात: 90 वर्ष की आयु में शांत परिणामों से देहावसान हो गया है। आप प्रारंभ से ही धार्मिक विचारों के सरल व्यक्ति थे। आपके ही धार्मिक संस्कारों के कारण आज आपका पूरा परिवार तत्त्वज्ञान से जुड़ा हुआ है। गुरुदेवश्री की उपस्थिति में आप अनेक बार सोनगढ़ जाकर तत्त्व लाभ लिया करते थे। श्री टोडरमल स्मारक ट्रस्ट एवं अन्य सभी सहयोगी संस्थाओं से चलनेवाली तत्त्वप्रचार-प्रसार की गतिविधियों की मुक्त कंठ से प्रशंसा किया करते थे। पंचकल्याणक, वेदी प्रतिष्ठा, तीर्थयात्रा, शिक्षण-शिविर, जीर्णोद्धार आदि कार्यों में आपका विशेष आर्थिक सहयोग रहता था। आप टोडरमल स्मारक ट्रस्ट के शिरोमणी संरक्षक भी थे।

ज्ञातव्य है कि आप श्री कैलाशचन्दजी सेठी, श्री प्रकाशचन्दजी सेठी, श्री चेतनजी सेठी व श्री रतनजी सेठी के पिताजी एवं महाविद्यालय के स्नातक श्री संजयजी सेठी के दादाजी थे।

आपके निधन से टोडरमल स्मारक परिवार एवं सम्पूर्ण मुमुक्षु समाज को अपूरणीय क्षति हुई है।

2. अकलूज निवासी श्री शांतिनाथ सोनाज का 4 अक्टूबर 09 को शांतपरिणामोंपूर्वक देहावसान हो गया है। आप बहुत स्वाध्यायी थे। टोडरमल स्मारक की गतिविधियों की आप बहुत सराहना करते थे तथा भरपूर सहयोग प्रदान करते थे। जयसिंगपुर में प्रशिक्षण शिविर आपके ही सहयोग से लगाया गया था। जयपुर में लगने वाले शिविरों में भी आप सदैव उपस्थित रहते थे।

3. भीलवाड़ा निवासी श्री निहालचन्द अजमेरा, श्री पद्मकुमार अजमेरा के भाई एवं श्री महेन्द्र अजमेरा के पिताजी **श्री दिलसुखरायजी अजमेरा** का दिनांक 12 सितम्बर 09 को 85 वर्ष की आयु में देहावसान हो गया है। आपने मरणोपरांत नेत्रदान भी किया है। आपकी स्मृति में आपके परिवार की ओर से वीतराग-विज्ञान व जैनपथप्रदर्शक में 500/- रुपये प्राप्त हुये हैं; एतदर्थ धन्यवाद।

दिवंगत आत्मायें शीघ्र ही अभ्युदय को प्राप्त हों ह्न यही भावना है।

डॉ. भारिल्ल के आगामी कार्यक्रम

13 से 17 नवम्बर	गजपंथा	पंचकल्याणक
18 व 19 नवम्बर	बीना	प्रवचन एवं हीरक जयन्ती
20 व 21 नवम्बर	विदिशा	प्रवचन एवं हीरक जयन्ती
22 से 24 नवम्बर	होशंगाबाद	तारण जयन्ती एवं हीरक जयन्ती
25 से 27 नवम्बर	देवलाली	वेदी प्रतिष्ठा
28 नवम्बर	मुम्बई	प्रवचन
29 नवम्बर प्रात:	इन्दौर	प्रवचन एवं हीरक जयन्ती
29 नवम्बर सायं	उज्जैन	प्रवचन एवं हीरक जयन्ती
21 से 28 दिसम्बर	दक्षिण भारत	फैडरेशन यात्रा
29 व 30 दिसम्बर	बैंगलोर	प्रवचन
31 दिस. से 4 जनवरी	चेन्नई	प्रवचन
8 व 9 जनवरी	अहमदाबाद	प्रवचन